कबाड़नामा

अंक : 5 दिल्ली के कूड़ा चूनने वालों एवं कबाड़ियों की पत्रिका माह : अगस्त-सितम्बर 2006

गाँव का जमींदार और दिल्ली की सरकार

गाँव में चाय की मेरी दुकान थी, साथ में मामूली सी खेती भी। सुख से हम लोग जी रहे थे। लेकिन किसी कारण से गाँव के जमींदार से मेरे पिता नाराज हो गए उनके अत्याचार से मेरे पिता पागल हो गए। हम लोग गाँव छोड़कर भाग गए। बम्बई गए, फिर अजमेर, हमें भीख माँगना पड़ा। अंत में दिल्ली आए। यहाँ आकर कबाड़ के काम से जुड़ गये। सभी परेशानियों के बाबजूद भी काफी कुछ किया। परिवार फिर से बस गयां बच्चे को पाला-पोसा, उनकी शादी-विवाह की।

मो॰ नूर अफसर

7 साल से चिंतन से जुड़ा हूँ। इससे काफी सहारा मिला हमें काम के तरीके, पुलिस से सुरक्षा सभी कुछ इससे मिला।

लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट और सरकार हमारी यह खुशी हमसे छीनना चाहती है। अब हमें फिर वही गाँव का जमींदार याद आता है जिसे हम लोग भूल गए थे क्योंकि सरकार भी तो वैसा ही काम कर रही है।

हमें लगता है यह सरकार भी गाँव के जमींदार की तरह है जो सिर्फ गरीबों पर अत्याचार करना जानती है।

मो॰ नूर अफसर
निजामुद्दीन

गफ्फार की कहानी

गफ्फार

मेरी माँ की ख्वाहिश थी कि मैं पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनूँ। उन्होंने दरियागंज के एक हॉस्टल में मुझे रख दिया। मैं 3 साल तक वहाँ रहा उसके बाद भाई कहने लगे कि अगर कमाएँगें नहीं तो खाएँगे कहाँ से, घर की हालत ठीक नहीं थी। लेकिन माँ कहती थी कि पढ़ाई जरूरी है उन्होंने जबरदस्ती फिर दाखिला करवा दिया। लेकिन स्कूल फिर छोड़ना पड़ा, क्योंकि खर्चे पूरे नहीं होते थे। मैंने भाई के साथ ऑटो चलाना शुरू कर दिया। फिर भी खर्चा पूरा नहीं हो रहा था तो कूड़े का काम शुरू कर दिया, इसमें संघर्ष करके धीरे-धीरे एक गोदाम भी बना लिया। लेकिन इतने संघर्ष के बाद अब सीलिंग शुरू हो गई है। लगता है कि मेरी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी और हम फिर भूखों मरेंगे। दिल्ली से भागना पड़ेगा। हम करें तो क्या करें?

गफ्फार,
कोढ़ी कालोनी, नंदनगरी

चलों नाटक दिखाए

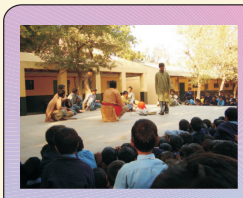

अब हम स्कूलों में जाते है और बच्चो को कुड़ें के बारे में बताते है। हमनें एक नाटक बनाया है ''कचरा मुहब्बत वाला''। हम बताते है क्योंकि हमनें सीखा हैं - कुड़े को कैसे संभालना है। हम नाटक में एक कबाड़ी की जिंदगी भी दिखाते है।

महाधरना

सिलिंग के विरोध में दिल्ली शहर के सभी क्षेत्रों से इकट्ठा होकर दिनांक 19.9.2006 को 15,000 से अधिक कबाड़ी भाइयों एवं बहनों ने जंतर-मंतर पर धरना दिया। चिंतन द्वारा आयोजित इस धरनें में दिल्ली के आस-पास के क्षेत्रों से भी हजारो की संख्या में कबाड़ी भाई एकत्र हुए और अपनी एकता का परिचय दिया। धरने के अंत में कबाड़ी साथियों का एक प्रतिनिधी मंडल, जयपाल रेड्डी (मंत्री भारत सरकार) से मिलने गया और अपनी माँगें प्रस्तुत की। हमारी मुख्य माँगें है कि कबाड़ पेशे को आवश्यक सेवा के रुप में मान्यता मिलें, हमें व्यापारियों की श्रेणीं में नही रखा जाए, क्योंकि हम शहर की गंदगी की सफाई और कूड़े की छटाई का काम करते हैं। हम कूड़ा प्रबधन नियम सन् 2000 का पालन करते है, अतः हमारे काम को मान्यता दी जाए।

हमें सरकार काम करनें के लिए उचित स्थान दें न कि ब्यापारी करार देकर कुड़े की छटाई की जगहों को सील किया जाए, इत्यादि।

विधवा-बेवा कहाँ जाए?

शहजादी बेगम

15-16 वर्ष पहले मेरे शौहर की मृत्यु हो गई। 5 बच्चे थे। कोढ़ियों की कालोनी में काम करके बच्चों का पेट भरती थी। भीख भी माँगनी पड़ी। खुद भूखा भी रहना पड़ा।

फिर कबाड़ चुनने लगी। इसकी आमदनी से बच्चों को पालकर बड़ा किया।

अब गोदाम कर लिया है बच्चे बड़े हो गए हैं काम में साथ देते हैं। बच्चों का परिवार बस गया है। लगता था बुढ़ापे की जिंदगी सुख से कटेगी, लेकिन सीलिंग का भूत आ गया। अब क्या होगा, हम कहाँ जाएँगे, क्या करेंगे? हमारे बच्चे तो और किसी काम को करना जानते ही नहीं क्या हमारी ये सरकार बुढ़ापे में हमसे फिर भीख मँगवाएगी।

शहजादी बेगम,
कोढ़ी कालोनी, नंदनगरी

पुलिस का हाथ कबाडी के साथ

आप हमें निम्न पते पर अपने सुझाव एवं लेख भेज सकते हैं :
चिंतन, सी-14, दुसरी मंजिल, लाजपत नगर, फेज-3, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-46574171/72/73, फैक्स : 011-46574174